Political science - Core 13th समकालीन राजनीतिक सिद्धांत Contemporary Political Theory
Professor - A. K. Srivastava
HOD - Political Science, Vishthapit Mahavidyalaya 1
(Balidih)

(2.) डेविड ईस्टन द्वारा प्रतिपादित व्यवहारवाद के प्रमुख आयामों का वर्णन करें।

→ (Postulates of Behaviouralism propounded by David Easton).

व्यवहारवादी उपागम परम्परागत राजनीति-शास्त्र की राज्य संबंधी औपचारिक, कानूनी एवं दार्शनिक सीमाओं को स्वीकार नहीं करता। यह अपने आनुभाविक एवं सैद्धांतिक विश्लेषण की इकाई व्यक्तियों और समूहों के व्यवहार को मानता है। व्यवहारवादी उपागम के अनुसार यह ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं है कि उसे कैसा होना चाहिए; मूल्यों का महत्व हो सकता है, किंतु व्यवहारवादी आदर्शों तथा आनुभविक तथ्यों में अंतर करते हैं। राजनीति का अध्ययन से अधिक करते समय मानव के आचरण का अध्ययन राजनीतिक संस्थाओं के औपचारिक ढाँचे के अध्ययन से अधिक महत्वपूर्ण है। राजनीतिक विश्लेषण में व्यक्ति-निष्ठ मूल्यों तथा कल्पनाओं का कोई महत्व नहीं है। रॉबर्ट डहल के अनुसार "व्यवहारवादियों का लक्ष्य शासन की समस्त घटनाओं को मानव के पर्यवेक्षित व्यवहार के रूप में देखना है। वे वस्तुतः वैज्ञानिक सिद्धांत तथा उसका सत्यापन करना चाहते हैं।" वे मानते हैं कि राजनीतिक शोध क्रमबद्ध होने के साथ-साथ सैद्धांतिक पृष्ठभूमि पर आधारित हो। तथ्यों तथा

OPPO A5 2020

घटनाओं को समझा जा सकता है तथा उनके संबंध में भविष्यवाणी की जा सकती है। उदाहरणार्थ, यह देखा गया है कि मनुष्य विभिन्न अवसरों पर कुछ बातों के संबंध में एक ही प्रकार के व्यवहार करते हैं। कई बार चुनावों के समय मतदाता एक के बाद दूसरे चुनाव में प्रायः एक ही व्यक्ति अथवा राजनीतिक दल को अपना मत देते हैं। उनके इस अनवरत व्यवहार को उनकी सामाजिक, आर्थिक अथवा ~~राजनीतिक दल को अपना मत देते हैं~~ जातीय पृष्ठभूमि में झाँककर देखा जा सकता है। व्यवहार की नियमितताओं के आधार पर निकाले गए निष्कर्षों के प्रकाश में राजनीतिक घटनाओं को अधिक आसानी से समझा जा सकता है और उनके संबंध में भविष्यवाणी की जा सकती है। राजनीति विज्ञान, इस प्रकार अंततोगत्वा एक ऐसे विज्ञान का रूप ले सकता है जिसमें विश्लेषण और भविष्यवाणी दोनों की ही क्षमता हो।

2.) सत्यापन :- व्यवहारवादी मानते हैं कि मानवीय व्यवहार के संबंध में उपलब्ध ज्ञान को अनुभववादी मानकों के आधार पर सत्यापित किया जा सकता है।

OPPO A5 2020

वस्तुतः सत्यापन विधि वैज्ञानिकता का आधार है। इसके अंतर्गत संग्रहीत जानकारी का सत्यापन किया जाता है। व्यवहारवादी अध्ययन में यह आवश्यक होता है कि मानव व्यवहार के संबंध में एकत्रित सामग्री को अवसर आने पर पुनः जाँचा जाए और उसकी पुष्टि की जाए। इस क्रिया को सत्यापन कहते हैं।

3.) तकनीक :- व्यवहारवादी शोध सामग्री का संग्रह करने और उनकी व्याख्या करने में सही ढंग से तकनीकों के प्रयोग को बहुत अधिक महत्व देते हैं और मानते हैं कि शोध कार्यों में ऐसे उपकरणों और प्रविधियों का प्रयोग करना चाहिए जिनके आधार पर सुसंगत, विश्वसनीय और ग्रहण योग्य सामग्री जुटायी जा सके। शोधकर्ता को अपनी शोध पद्धतियों के संबंध में सतर्क और आलोचनात्मक बने रहने की दृष्टि से उन्होंने प्रश्नावली, प्रतिदर्श सर्वेक्षण, गणितीय प्रतिरूप, अनुरूपण, आदि परिष्कृत उपकरणों के प्रयोग का सुझाव दिया है।

OPPO A5 2020

आँकड़ों में इकट्ठा करने के साधन विश्वसनीय हों। वे उपलब्ध समस्त वैज्ञानिक साधनों का प्रयोग करना चाहते हैं ताकि राजविज्ञान को 'विज्ञान' कहा सकें।

डेविड ईस्टन ने व्यवहारवाद के कुछ अभिग्रह और उद्देश्य निर्धारित किए हैं जिन्हें उसने एक ऐसी बौद्धिक आधारशिला का नाम दिया है जिसके आधार पर इस समस्त आंदोलन का भवन खड़ा किया जा सकता है। ये निम्न प्रकार हैं:

1.) नियमितताएँ (Regularities)
2.) सत्यापन (Verification)
3.) तकनीक (Techniques)
4.) परिमाणीकरण (Quantification)
5.) मूल्य (Values)
6.) क्रमबद्धीकरण (Systematization)
7.) विशुद्ध-विज्ञान (Pure Science)
8.) समस्तता (Integration)

1.) नियमितताएँ :- व्यवहारवादी मानते हैं कि राजनीतिक व्यवहार के सामान्य सिद्धांतों को खोजा जा सकता है। राजनीतिक व्यवहार में कुछ ऐसी प्रवृत्तियाँ पाई जाती हैं जो बार-बार उभरकर सामने आती हैं, जिनके संबंध में इस प्रकार के निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं जिनके आधार पर राजनीतिक

OPPO A5 2020

विशिष्ट और न्यूनतम् सामाजिक समस्याओं में संभव न भी हो तो भी उन्हें इसमें आपत्ति नहीं होगी।

8.) समग्रता :- व्यवहारवादी मानते हैं कि मानव व्यवहार का अध्ययन खंडों में नहीं किया जा सकता। मानव व्यवहार में बुनियादी एकता पाई जाती है और इसी कारण समाज के विज्ञान के विभिन्न विषय एक-दूसरे के निकट हैं।

व्यवहारवादियों के अनुसार मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, यद्यपि उसकी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और अन्य प्रकार की गतिविधियों के बीच सीमा रेखाएँ खींचने का प्रयत्न किया जाता है तथापि इनमें से कोई भी गतिविधि ऐसी नहीं है जिसे संपूर्ण जीवन के व्यापक परिप्रेक्ष्य में रखे बिना ठीक से समझा जा सके। इस कारण किसी भी राजनीतिक घटना के अध्ययन के लिए यह आवश्यक है कि हम समाज में होने वाली आर्थिक, सांस्कृतिक और अन्य घटनाओं को अच्छी तरह समझ सकें। यदि राजनीतिक मनुष्य को आर्थिक, सामाजिक अथवा सांस्कृतिक मनुष्य से विच्छिन्न करके देखने और समझने का प्रयास किया गया तो उसके राजनीतिक

OPPO A5 2020

4.) परिमाणीकरण :- व्यवहारवादियों के अनुसार उपलब्ध सामग्री तथा तथ्यों में स्पष्टता एवं निश्चितता लाने के लिए परिमापन एवं परिमाणीकरण किया जाना चाहिए। उनके अनुसार आधार सामग्री की छानबीन के लिए अस्पष्ट गुणात्मक निर्णयों के स्थान पर जब तक परिमापन और अन्य कठोर पद्धतियों का सहारा नहीं लिया जाता तब तक राजनीतिक जीवन के सुनिश्चित और सही ज्ञान को प्राप्त करना असंभव होगा। इस कारण आवश्यक है कि अन्य सामाजिक विज्ञानों के समान ही राजनीति विज्ञान में भी शोध की आधार सामग्री का परिमाणीकरण किया जाए और सभी निष्कर्ष परिणामात्मक आधार सामग्री पर ही निर्धारित हों।

5.) मूल्य :- व्यवहारवादियों के अनुसार नैतिक मूल्यांकन तथा तथ्यात्मक ~~अब~~ व्याख्या में अंतर है। मूल्यों तथा तथ्यों को पृथक रखा जाना चाहिए। लोकतंत्र, समानता अथवा स्वतंत्रता अपने आप में बहुत ऊँचे मूल्य हो सकते हैं, परंतु उनकी सत्यता एवं असत्यता को वैज्ञानिक ढंग से सिद्ध नहीं किया जा सकता। वैज्ञानिक विश्लेषण के लिए उस सीमा तक मूल्यों को दृष्टि में रखा जा सकता है जिस सीमा तक वे राजनीतिक व्यवहार का विनिश्चय करते हैं किंतु अनुसंधानकर्ता के लिए स्वयं के व्यक्तिगत

OPPO A5 2020

मूल्यों से दूर रहकर ही किसी समस्या का अध्ययन करना समीचीन है।

दूसरे शब्दों में, व्यवहारवादियों के अनुसार राजनीति का वैज्ञानिक अध्ययन अनुभाविक प्रणालियों के माध्यम से किए जाने के कारण नैतिक प्रश्नों से उसका कोई संबंध नहीं रह जाता।

6.) क्रमबद्धीकरण :- व्यवहारवादी यह मानते हैं कि शोधकार्य क्रमबद्ध अथवा व्यवस्थित होना चाहिए। प्रत्येक शोधकार्य को 'सिद्धांत' से सम्बद्ध किया जाना चाहिए। शोध यदि सिद्धांत से अनुप्रमाणित नहीं है तो वह महत्वहीन हो सकती है और सिद्धांत यदि आधार सामग्री से समर्थित नहीं है तो वह निरर्थक हो सकता है। संक्षेप में, सिद्धांत (theory) से स्वतंत्र एकत्रित किए गए निरर्थक हैं।

7.) विशुद्ध विज्ञान :- व्यवहारवादी विशुद्ध विज्ञान की दृष्टि से विचार करते हैं। वे इस बात से सहमत हैं कि सिद्धांत के बोध से वास्तविक जीवन की समस्याओं को समझा जा सकता है। सिद्धांत और व्यवहार से उसका प्रयोग वैज्ञानिक उद्यम का अंग है। तथापि वे शुद्ध अनुसंधान पर बहुत अधिक जोर देते हैं, यदि उसका प्रयोग

OPPO A5 2020

(3) उत्तर-व्यवहारवाद से क्या अभिप्राय है? इसके आधारभूत लक्षण अथवा मान्यताओं का वर्णन करें।

→ उत्तर-व्यवहारवाद : अभिप्राय
(Post-Behaviouralism : Meaning)

व्यवहारवादी राजनीतिक विश्लेषण में 'प्रामाणिक अध्ययन' के दौर में प्रामाणिकता में अंतर्निहित एवं प्रामाणिकता को प्रभावित करने वाले आधारभूत तथ्य 'मूल्य' (Values) के अध्ययन को उचित स्थान नहीं दिया गया। विश्लेषण की तकनीक को विश्लेषण वस्तु (लक्ष्य) से अधिक महत्वपूर्ण बना दिया गया। इसके परिणामस्वरूप राजनीतिक विश्लेषण को तथाकथित वैज्ञानिकता का एक निश्चित स्तर तो प्राप्त हो गया, लेकिन उसके निष्कर्षों में 'औचित्य' (relevance) एवं वैध शाश्वतता का अभाव बना रहा। उत्तर-व्यवहारवादी राजनीतिक विश्लेषण में 'मूल्यों' को समाविष्ट कर राजनीतिक अध्ययन को औचित्यपूर्ण एवं शाश्वतता (प्रासंगिकता) प्रदान करने के पक्षधर है। उत्तर-व्यवहारवाद अपने विश्लेषण में वैज्ञानिकता के तत्व को शिथिल करना नहीं चाहता बल्कि वह वैज्ञानिकता के परिप्रेक्ष्य को ज्यादा विस्तृत करना चाहता है। इस अर्थ में उत्तर व्यवहारवाद को एक प्रकार की वैचारिक क्रांति कहा जा

व्यवहार के यथार्थ स्वरूप की पहचान पाना संभव नहीं हो सकेगा। संक्षेप में, व्यवहारवादी अंतः-शास्त्रीय दृष्टिकोण के समर्थक हैं।

End.

OPPO A5 2020

सकता है क्योंकि यह राजनीतिक प्रक्रिया के अध्ययन के नवीन समन्वयात्मक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है जिसमें 'तथ्य' (facts) एवं (values) दोनों का विवेक सम्मत समावेश किया गया है।

डेविड ईस्टन के शब्दों में उत्तर-व्यवहारवादी क्रांति उस 'व्यवहारवाद' का घोर विरोध करती है, जिसके द्वारा राजनीति विज्ञान को कम प्राकृतिक विज्ञान की कठोर वैज्ञानिक शोध पद्धति का प्रयोग कर, परिशुद्ध विज्ञान का रूप देने का साहस किया गया है। ईस्टन ने यह भी स्पष्ट कहा कि (जो यहाँ उल्लेखनीय है) यह विरोध परंपरावादियों द्वारा किए गए इसी प्रकार के विरोध से सर्वथा भिन्न है। परंपरावादी वैज्ञानिक पद्धति का विरोध करते हैं, क्योंकि वे प्रायः मनुष्य के व्यवहार में परीक्षण योग्य सामान्यताएँ खोजने की संभावनाओं को ही अस्वीकार करते हैं। उनका मत है कि मानवीय और सामाजिक व्यवहार अद्वितीय घटनाओं से भरा पड़ा है, उसका सामान्यीकरण नहीं हो सकता। उत्तर-व्यवहारवाद के समर्थक इस परंपरावादी तर्क से सहमत नहीं है। उनका मानना है कि मानव एवं सामाजिक व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन संभव

OPPO A5 2020

ही नहीं है, अपितु आवश्यक एवं उचित भी है। उत्तर-व्यवहारवाद के समर्थकों का कहना केवल यह है कि शोध किसी भी पद्धति से क्यों न किया गया हो उसे प्रासंगिकता की कसौटी पर खरा उतरना चाहिए। इस सिद्धांत को डेविड ईस्टन 'प्रासंगिकता का सिद्धांत' (Credo of relevance) अथवा 'प्रासंगिकता धर्म' कहकर पुकारते हैं। प्रासंगिकता का अभाव व्यवहारवादी शोध में तो लगभग है ही, परंपरावादी शोध में भी संभव है। अतएव एक अर्थ में उत्तर-व्यवहारवाद उन सभी परम्परावादी और व्यवहारवादी शोधों की आलोचना है जो प्रासंगिक नहीं हैं।

वस्तुतः उत्तर-व्यवहारवाद व्यवहारवाद का अगला चरण, एक सुधार आंदोलन तथा नवीन दिशा संकेत है। इसके दो नारे हैं — 'कर्म' (Action) तथा 'प्रासंगिकता' (Relevance)। यह व्यवहार वैज्ञानिकों से समाज तथा राज-व्यवस्था की तात्कालिक समस्याओं, संकटों और चुनौतियों का अध्ययन करने तथा उनके निदान ढूंढने की माँग करता है। इसका

रूप से अपने शोधकार्य की प्रासंगिकता स्थापित करें। यदि यह कहने के मार्ग में उनकी शोध तकनीक या पैराडिम (Paradigm) बाधक है, तो भले ही तकनीक छोड़ दें, पर प्रासंगिकता न छोड़ें। व्यवहारवादियों का नारा था — 'अस्पष्ट होना जितना बुरा था, गलत होना उतना नहीं।' (It was better to be wrong than vague)। उत्तर — व्यवहारवादियों ने एक विपरीत नारा दिया कि 'अप्रासंगिक सुनिश्चितता से अस्पष्ट ~~होना~~ होना कम बुरा था, (It was better to be vague than non-relevantly precise)।

2.) सामाजिक परिवर्तन पर बल :- व्यवहारवाद में मामूली परिवर्तनों से संबंधित रूढ़िवादी विचारधारा छिपी हुई है। उत्तर - व्यवहारवाद व्यापक मूल्यों के संदर्भ में परिवर्तन का समर्थन करता है।

उत्तर - व्यवहारवादियों का मानना है कि जाने - अनजाने व्यवहारवादी परिवर्तन विरोधी (रूढ़िवादी) हो जाते हैं। परिवर्तन विरोध व्यवहारवाद के प्रणालीशास्त्र और तकनीक में निहित है। व्यवहारवादी तथ्यों के वर्णन और विश्लेषण तक अपने को सीमित रखता है। उन तथ्यों के व्यापक संदर्भ को, उनकी सामाजिक

प्रासंगिकता को समझने की आवश्यकता पर ध्यान नहीं देता, क्योंकि वह समझता है कि यह उसके प्रणालीशास्त्र के अनुसार वर्जित है। सामाजिक प्रासंगिकता या तथ्यों के व्यापक संदर्भ में उनको समझना शायद उसके पेराडिम की आवश्यकताओं के अनुरूप न हो या हो सकता है कि उसमें नैतिक तत्व निहित होने की संभावना न हो। अतएव वह व्यापक संदर्भ की ओर से उदासीन ही रहता है। इस सबका परिणाम यह हुआ कि व्यवहारवादी राजनीति विज्ञान ने एक ऐसी 'सामाजिक रूढ़िवादिता की विचारधारा' (an ideology of Social Conservatism) का रूप ले लिया था जिसमें केवल धीमी गति से होने वाले परिवर्तनों के लिए ही गुंजाइश थी।

3.) समस्याओं के विश्वसनीय निदान की आवश्यकता:-
उत्तर - व्यवहारवादियों के अनुसार राजनीति विज्ञान को अमूर्तिकरण, विश्लेषण, विशिष्ट शब्दावली के विकास आदि में कम रुचि लेकर मानव जाति की आवश्यकताओं को पूरा तथा संकटों का समाधान करने में सहायता करनी चाहिए।

व्यवहारवादी युग में राजनीति विज्ञान ने 'राजनीति की क्रूर यथार्थताओं (Brute realities of politics) से अपना नाता

मूल मंतव्य है - सामाजिक शोध समाज की आवश्यकताओं के संदर्भ में 'प्रासंगिक' तथा 'संगतिपूर्ण' होनी चाहिए ।

उत्तर - व्यवहारवाद के आधारभूत लक्षण अथवा मान्यताएँ (Basic postulates or salient features of post - Behaviouralism).

डेविड ईस्टन ने उत्तर - व्यवहारवाद के दो प्रमुख लक्षण बताए हैं - शोध की सार्थकता या प्रासंगिकता और क्रियान्विता या कर्म । डेविड ईस्टन ने उत्तर व्यवहारवाद की सार सात मान्यताओं या विशेषताओं का उल्लेख इस प्रकार किया है जिन्हें वह 'प्रासंगिकता के सिद्धांत' कहकर पुकारते हैं :-

1.) ~~प्रविधि~~ से पूर्व सार (Substance must Come Before technique)

2.) सामाजिक परिवर्तन पर बल (Emphasis on Social change rather than social preservation)

3.) समस्याओं के विश्वसनीय निदान की आवश्यकता (Reliable Solution of Contemporary problems and Crises)

OPPO A5 2020

1.) मूल्यों की महत्वपूर्ण भूमिका :- उत्तर - व्यवहारवादियों के अनुसार कोई भी ज्ञान विशेषकर सामाजिक विज्ञान मूल्यात्मक दृष्टि से न तो तथ्यों एवं प्रासंगिक यथार्थताओं से तटस्थ रहा है और न ही रह सकता है। अतएव व्यवहारवादियों को चाहिए कि अपने ज्ञान की सीमाएँ पहचानने के लिए उन आधारभूत मूल्यों को पहचानें जिन पर वह ज्ञान टिका है।

व्यवहारवादियों ने मूल्यों के महत्व को सर्वथा अस्वीकार न करते हुए भी विज्ञानवाद और मूल्य निरपेक्ष दृष्टिकोणों पर इतना जोर दिया था कि व्यवहारिक दृष्टि से मूल्यों को सर्वथा उपेक्षणीय मान लिया गया था। इस स्थिति ने राजनीति विज्ञान को नीरस तथा प्रयोजनहीन बना दिया। वस्तुतः मूल्यों की आधारशिला पर ही ज्ञान की इमारत खड़ी की जा सकती थी और मूल्यों को यदि ज्ञान प्रेरक शक्ति न माना जाए तो सदा ही यह खतरा रहता है कि ज्ञान को गलत उद्देश्यों के लिए काम में लिया जाएगा। राजनीति में मूल्यों का बहुत अधिक महत्व है और वैज्ञानिकता के नाम पर राजनीतिक अध्ययन से मूल्यों को बहिष्कृत नहीं किया जा सकता। वस्तुतः उत्तर - व्यवहारवादियों ने मूल्यों की निर्णायक भूमिका को स्वीकार किया है।

OPPO A5 2020

4.) मूल्यों की महत्वपूर्ण भूमिका (Value premise)
5.) बुद्धिजीवियों की भूमिका (Political Scientists, being intellectuals had a role to play)

6.) कर्मनिष्ठ विज्ञान (Action Science)
7.) व्यवसाय का राजनीतिकरण (Politicisation of the professions)

1.) प्रविधि से पूर्व सार :- उत्तर - व्यवहारवादियों का कहना है कि व्यवहारवादी तकनीक को तथ्यों (सार या विषय वस्तु) के ऊपर प्रधानता देते हैं। उत्तर - व्यवहारवादी यह मानते हैं कि प्रायः तथ्य और तकनीक दोनों का साथ - साथ उचित प्रयोग किया जाना चाहिए और ऐसा संभव भी है। तथ्यों की बलि चढ़ाकर व्यवहारवादी प्रायः तकनीक के पीछे भागते रहे हैं। जबकि उत्तर - व्यवहारवादी कहते हैं कि अनुसंधान के लिए परिष्कृत उपकरणों का विकास करना उपयोगी है, परंतु उससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह उद्देश्य है जिसके लिए इन उपकरणों को प्रयोग में लाया जा रहा है। उत्तर - व्यवहारवादियों के अभिमत में व्यवहारवादियों को चाहिए कि वे महत्वपूर्ण समसामयिक सामाजिक समस्याओं (तथ्यों) के साथ प्रयोजनात्मक

5.) बुद्धिजीवियों की भूमिका :- उत्तर - व्यवहारवादियों ने राजनीतिशास्त्रियों को यह भी याद दिलाना चाहा कि बुद्धिजीवी होने के नाते समाज में उनकी अपनी एक भूमिका है। राजनीति वैज्ञानिक बुद्धिजीवी होने के नाते यदि मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध नहीं है तो वह अपनी उचित भूमिका नहीं निभाता, वरन् अपने दायित्व से विमुख हो जाता है। सभ्यता के मानवीय मूल्यों के संरक्षण में अधिक से अधिक प्रयत्नशील होना उनका प्रमुख उत्तरदायित्व था। वस्तुनिष्ठ होने के नाते और ऐसे अनुसंधानों के नाम पर, जिनमें बहुत अधिक समय खर्च होता है, राजनीति वैज्ञानिक यदि अपने को सामाजिक समस्याओं से अलग रखेंगे तो वे 'केवल ऐसे तकनीकविद् और यंत्रवादी बनकर रह जाएंगे जो समाज के साथ खिलवाड़ में लगे हुए हैं। यदि वे सामाजिक दायित्वों को नहीं समझते तो समाज भी उन्हें वे सारी सुविधाएँ देने से इंकार कर देगा जो समाज ने उन्हें दी हैं, जैसे शोध की स्वतंत्रता, आदि।

6.) कर्मनिष्ठ विज्ञान :- उत्तर - व्यवहारवादी कर्मनिष्ठता पर बल देते हैं और उनका कथन है कि राजनीतिक विषयों के अध्ययनकर्ता को समाज के पुनर्निर्माण कार्य में रत होना चाहिए। उनका मत है कि ज्ञान व्यावहारिक

बिल्कुल न तोड़ लिया था। व्यवहारवादी अन्वेषण का लक्ष्य यदि वास्तव में तथ्यों की गहराई तक पहुँचना था तो यह कैसे संभव माना जा सकता था कि राजवैज्ञानिक स्थिति की यथार्थताओं के प्रति अपनी आँखें सर्वथा बंद रखें?

यह युग संकट और चिंता का था और व्यवहारवाद के अमूर्त प्रत्ययों एवं अवधारणाओं में व्यक्ति तथा समाज की व्यापक एवं गंभीर समस्याओं के समाधान की क्षमता नहीं थी। अणुबम का भय, बढ़ती हुई जनसंख्या, दूषित वातावरण के खतरे, राष्ट्रीय एव अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक ओर भयंकर गरीबी तथा दूसरी ओर विपुल सम्पन्नता का सहअस्तित्व आदि ऐसे संकट हैं जिनका यदि तात्कालिक उपचार नहीं किया जाता तो सारी मानवता का विनाश हो सकता है। राजनीतिशास्त्र का औचित्य उसी स्थिति में सर्वमान्य होगा, जबकि समाज में व्याप्त विषमताओं, संघर्षों, आकांक्षाओं, संदर्भों एवं चिंताओं के उचित समाधान किए जाएँ। इसीलिए व्यवहारवाद पर यह आक्षेप है कि उसकी शोध वस्तुस्थिति से असम्बद्ध होती है। उत्तर-व्यवहारवाद का मूल उद्देश्य राजनीतिशास्त्र की मदद करना है ताकि इस संकट से बचा जा सके, जिससे मानव जाति की वास्तविक आवश्यकता को पूरा किया जा सके।

भूमिका अदा करनी चाहिए जिससे समाज के उद्देश्यों को एक सुव्यवस्थित दिशा प्रदान की जा सके, अतः बुद्धिजीवियों के संघों और समुदायों, यहाँ तक कि विश्व-विद्यालयों को मानव मूल्यों की रक्षार्थ संघर्ष के मैदान में आ जाना चाहिए। इनके व्यवसाय का राजनीतिकरण अपरिहार्य एवं वांछनीय है।

डेविड ईस्टन ने इस प्रकार उत्तर-व्यवहारवाद के प्रमुख लक्षण अथवा धारायें गिनाई हैं। उनका मत है कि सभी उत्तर-व्यवहारवादी इन सभी बातों से सहमत हों, ऐसा नहीं। उसने तो उपर्युक्त विवेचन के आधार पर उत्तर-व्यवहारवाद के प्रमुख सूत्रों का एक कैमरा चित्र प्रस्तुत करने का मात्र-प्रयास किया है।

OPPO A5 2020

(4) राजनीतिक सिद्धांत के पतन के कारणों का वर्णन करें।

→ राजनीतिक सिद्धांत के ह्रास के निम्नलिखित कारण बतलाए जाते हैं:

1.) महान् राजनीतिक दार्शनिकों की परम्परा का अवसान
2.) राजनीति शास्त्र को 'विज्ञान' बनाने की चेष्टा
3.) व्यवहारवाद का उदय और प्रभाव
4.) तथ्यों के ~~संकल्प~~ संकलन पर दिया जानेवाला ज़ोर

OPPO A5 2020

रूप से सार्थक होना चाहिए। यदि हमारे व्यवहारवादी शोध परिणामों का रचनात्मक क्रियान्वयन नहीं हो सकता तो वह सार्थक ज्ञान नहीं। अर्थात ज्ञान का क्रियात्मक होना (Knowledge must be put to work) आवश्यक है। डेविड ईस्टन के शब्दों में, "जानने का अर्थ है कार्य करने का उत्तरदायित्व अपने हाथों में लेना और कार्यरत होने का अर्थ है समाज के पुनर्निर्माण में अपने को लगा देना।" उत्तर - व्यवहारवादियों की माँग है कि चिंतनोन्मुख ज्ञान के स्थान पर प्रत्येक शोधकर्ता को ऐसा शोध करना चाहिए, जिसका समसामयिक समस्याओं के सुलझाने में योगदान हो। अतः राजनीति विज्ञान को मनोविज्ञान (Contemplative science) के स्थान पर कार्य-विज्ञान (action Science) बनना चाहिए।

7.) व्यवसाय का राजनीतिकरण :- राज-वैज्ञानिक तटस्थ रहने में गर्व अनुभव करते हैं। वे समाज की राजनीतिक गर्मा-गर्मियों में स्वयं को शामिल करके सक्रिय भूमिका अदा करने में विश्वास नहीं रखते। जबकि उत्तर-व्यवहारवादी की मान्यता है कि राजनीतिशास्त्रियों को समाज में सकारात्मक

OPPO A5 2020

पद्धतियों के कारण चिंतन और अनुसंधान (Philosophy and Research) को पृथक् करना सहज हो गया है। अब राजनीतिक शोध में कल्पना, नैतिकता, सौंदर्य बोध जैसे दार्शनिक तत्व चिंतन की प्रभावशीलता कम होने लगी।

व्यवहारवाद के प्रमुख आयामों - मूल्यों के प्रति उदासीनता अथवा नैतिकता के प्रति तटस्थता ने राजनीतिक सिद्धांत को तुच्छ बना दिया, यह केवल आंकड़ों का संग्रह और विचारों की अल्प फसल के रूप में रह गया है। इसके सिद्धांतवेत्ताओं की राजनीतिक सिद्धांत के क्षेत्र में रचनात्मक उपलब्धि विशेष नहीं रही है। इसके लेखक प्लेटो, अरस्तू, हॉब्स, लॉक, रूसो, मिल और मार्क्स की गहराई तक मुश्किल से पहुंच पाते हैं अथवा इनमें ई. एफ. कार्रिट, एल. टी. हाबहाउस, डी. पी. प्लामेनाट्ज और लास्की के चिंतक की ऊँचाई नहीं है। व्यवहारवाद ऐसा कोई राजनीतिक सिद्धांत विकसित नहीं कर सका जो कि समस्त मानव समाज के लिए वृहत्त समाकलनात्मक प्रक्रिया बन सके। व्यवहारवादी अपने टेढ़े-मेढ़े रास्ते और आंकड़ों से भरी संकरी गलियों से गुजरते हुए केवल निम्नस्तरीय सिद्धांतों तक ही अपना सफर तय कर सके हैं।

व्यवहारवादी चिंतकों ने मानवीय व्यवहार का ऐसा कोई नियम नहीं खोज निकाला जो कि मैकियावेली या हॉब्स के चिंतन की टक्कर का हो। इसकी शोध हल्की-फुल्की आकस्मिक

और असम्बद्ध बातों की भरमार है। जितने भी परिणाम अथवा निम्न कोटि के सिद्धांत इसने अभी तक प्रस्तुत किए हैं वे सामाजिक दृष्टि से महत्वहीन लगते हैं। "यदि व्यवहारवाद सर्वव्यापी हो गया तो यह ठीक उसी प्रकार राजनीतिक सिद्धांत को नष्ट करेगा जैसा कि दर्शन ने साहित्य को विनष्ट कर दिया है।"

4.) तथ्यों के संकलन पर दिया जाने वाला जोरः- राजनीतिक सिद्धांत मूल्यपरक होता है। परंपरागत राजनीतिक सिद्धांत भी मूल्यपरक (value based) था, किंतु आज तथ्यों (facts) के संकलन पर अधिक बल दिया जाता है। आज तो तथ्यों पर आधारित राजनीतिक सिद्धांत के निर्माण की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। जो यह कहते हैं कि राजनीतिक सिद्धांत मर चुका है व इस बात पर जोर देते हैं कि राजनीति विज्ञान को अपनी संपूर्ण शक्ति से तथ्यों का अध्ययन करना चाहिए। आज तथ्यों पर आधारित राजनीतिक सिद्धांत के निर्माण की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है, इसलिए भी परंपरागत स्वरूप वाले राज सिद्धांत का ह्रास हुआ है।

5.) इतिहासवाद की बढ़ती हुई प्रवृत्तिः- कतिपय विद्वानों का कहना है कि इतिहासवाद की बढ़ती हुई प्रवृत्ति के कारण भी राजनीतिक सिद्धांत का पतन हुआ न कि नवनिर्माण। प्लेटो, अरस्तू से लेकर 19वीं शताब्दी तक राजनीतिक सिद्धांत की रचनात्मक भूमिका रही, जिसका अर्थ यह था कि राजनीति

6.) विचारधाराओं का बढ़ता हुआ प्रभाव :- जरमीनो जैसे विद्वान राजनीतिक सिद्धांत के पतन के कारण 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में 'विचारधाराओं' (Ideology) के बढ़ते हुए प्रभाव को मानते हैं।

7.) निराशावाद :- अल्फ्रेड कोबां के अनुसार राजनीतिक सिद्धांत के ह्रास का एक और कारण उनकी निराशावाद की पुष्टि में देखा जा सकता है जो राजनीति के किसी भी विचारयुक्त विवेचन में नैतिकता के स्थान की उपेक्षा करता है। "आज का राजनीतिज्ञ सामाजिक शक्ति और सत्ता की राजनीति में कार्यों के ऊपर मूल्यों को प्राथमिकता देने वाला नहीं है। यदि अतीत में राजनीतिक सिद्धांत अधिक लोकप्रिय हुआ तो इसका यह कारण था कि वह नीतिशास्त्र या आचारशास्त्र की शाखा के रूप में जीवित था। इसके विपरीत आधुनिक राज्य विज्ञान में आज इस बारे में कोई चर्चा नहीं होती कि इसे कैसा होना चाहिए और मेरे विश्वास में, इसका यह कारण है कि यह विचारों के दो तरीकों से दब गया है जिनका इसकी नैतिक अंतः वस्तु पर घातक प्रभाव पड़ा है, वे हैं इतिहास और विज्ञान और उन्होंने आधुनिक मस्तिष्क पर अधिकार जमा लिया है।"

8.) अनुभववाद :- 20वीं शताब्दी को अति तथ्यवाद का युग कहा जाता है। राजनीतिक सिद्धांत की प्रतिष्ठा कम हो गई और अधिकाधिक विद्वा

5.) इतिहासवाद की बढ़ती हुई प्रवृत्ति
6.) विचारधाराओं का बढ़ता हुआ प्रभाव
7.) निराशावाद
8.) अनुभववाद
9.) राजनीति मात्र औपचारिक अध्ययन ।

1.) महान राजनीतिक दार्शनिकों की परंपरा का अवसान :- कार्ल मार्क्स, जे. एस मिल तथा लास्की के बाद एक भी उल्लेखनीय (outstanding) राजनीतिक दार्शनिक नहीं हुआ है। वस्तुतः राजनीतिक दार्शनिकों की महान परंपरा का अवसान हो चुका है इसलिए राजनीतिक सिद्धांत का पतन होना स्वाभाविक है।

2.) राजनीति शास्त्र को 'विज्ञान' बनाने की चेष्टा :- राजनीतिक सिद्धांत के ह्रास का दूसरा कारण है कि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद नव - राजनीतिशास्त्री राजनीति शास्त्र को राजनीति का विज्ञान बनाने की चेष्टा करने लगे। जब राजनीति को विज्ञान बनाने की चेष्टा में सब लोग जुटे हों तो राजनीतिक सिद्धांत का निर्माण कैसे हो सकता है, क्योंकि उसका आधार दर्शन है न कि विज्ञान ।

3.) व्यवहारवाद का उदय और प्रभाव :- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद व्यवहारवाद का बोलबाला बढ़ने लगा। व्यवहारवाद का आधार नई अनुभववादी प्रविधियाँ हैं जिनमें सांख्यिकीय पद्धति, साक्षात्कार पद्धति, सर्वे पद्धति आदि प्रमुख हैं। इन नवीन

कारण हैं– राजनीति को विज्ञान बनाने की प्रवृत्ति, व्यवहारवादी आंदोलन, इतिहासवाद, अति तथ्यवाद और विचारधारा का बढ़ता प्रभाव।

OPPO A5 2020

इंद्रियानुभविकवाद को अपनाने लगे। इंद्रियानुभविकवाद अनुसंधान भी तथ्यवाद का पर्यायवाची बन गया। अधिक से अधिक तथ्य एकमात्र एकत्रित किए जाने लगे। अति तथ्यवाद से जो निष्कर्ष निकाले जाते हैं वे मात्र सामान्यीकरण होते हैं। जिस ढंग से अनुसंधान में तथ्यवाद का जोर बढ़ता गया उसी रूप में राजनीतिक सिद्धांत की प्रतिष्ठा कम होने लगी।

9.) राजनीति मात्र शैक्षणिक अध्ययन :- आज राजनीति मात्र शैक्षणिक अध्ययन का विषय बन कर रह गयी है। कोबां के अभिमत में प्राचीनकाल में राजनीतिक सिद्धांत व्यावहारिक था, सिद्धांतशास्त्री और चिंतक अपने आप में दलीय व्यक्ति था। वह राजनीति में स्वयं भाग लेता था और अपने व्यवहार को सिद्धांत के साथ समायोजित करता था। अतीत में राजनीतिक सिद्धांत का अध्ययन - विश्लेषण ऐसे लोगों का कार्य होता था जो व्यावहारिक राजनीति से गहन रूप से संबंधित होते थे। इसके प्रतिकूल आज यह एक शैक्षणिक विषय मात्र बनकर रह गया है। राजनीति विज्ञान सिद्धांत से अलग हो गया है जबकि अतीत में ऐसा कभी नहीं हुआ था।

निष्कर्ष :- संक्षेप में, 20वीं शताब्दी में परंपरावादी (शास्त्रीय) स्वरूप वाले राजनीतिक सिद्धांत का ह्रास होने लगा जिसके प्रमुख

Page No.
Date :

ही सही है। यह आधुनिक अनुभवात्मक राजनीतिक सिद्धांत पर लागू नहीं होता जो अत्यधिक व्यवहारपरक और वैज्ञानिक है।

सही मायने में इसका अभिप्राय शास्त्रीय राजनीतिक के ह्रास से ही है और जब हम पुनरोदय की बात करते हैं तो इसका अभिप्राय शास्त्रीय लक्षणों वाले राजनीतिक सिद्धांत के उत्कर्ष से ही है। इसायाह बर्लिन, जीन ब्लॉण्डेल एवं लियो स्ट्रास डंके की चोट पर घोषणा करते हैं कि राजनीतिक सिद्धांत न तो मर रहा है और न ही मृत है, यह एकदम जीवित है। उनके विचारों एवं तर्कों को यहाँ संक्षेप में प्रस्तुत किया जा रहा है:

जीन ब्लॉण्डेल के तर्क:- ब्लॉण्डेल के अनुसार जो लोग राजनीतिक सिद्धांत के निधन की घोषणा करते हैं उनके तर्क हैं!

1.) वैज्ञानिक अनुभववाद और निश्चयवादी आग्रह ने राजनीति के अध्ययन पर अपना प्रभाव जमा लिया है,

2.) शास्त्रीय सिद्धांत के समर्थकों के राजनीति के बारे में चिंतन के तौर तरीके अपरिष्कृत, पुरातन और दकियानूसी थे,

OPPO A5 2020

Political Science, Core 13th समकालीन राजनीतिक सिद्धांत Contemporary Political Theory
Professor - A.K. Srivastava
HOD - Political Science, Visthapit Mahavidyalaya (Balidih).

1

5. राजनीतिक सिद्धांत के पुनरुत्थान से क्या समझते हैं? इस संबंध में ब्लॉडेल के विचारों का वर्णन करें।

→ राजनीतिक सिद्धांत का पुनरुत्थान: अभिप्राय (Revival or Resurgence of Political Theory: Meaning).

राजनीतिक सिद्धांत के ह्रास (पतन) और पुनरुत्थान जैसे शब्दों का विशिष्ट अर्थ है। जब ह्रास की बात करते हैं तो इसका अर्थ है शास्त्रीय परंपरागत राजनीतिक सिद्धांत को अस्वीकार करना अर्थात दर्शन और कल्पना पर आधारित राजनीतिक सिद्धांत का धीरे-धीरे पराभव हो जाना। जब पुनरुत्थान अथवा राजनीतिक सिद्धांत के पुनरोदय की बात करते हैं, तो यह द्वितीय विश्व-युद्ध के बाद की अवधि में व्यवहारवादी राजनीतिक सिद्धांत के आश्चर्यजनक विकास का परिचायक है। जी॰ ए॰ आमंड जैसा व्यवहारवादी सिद्धांत का प्रशंसक यह कहता है कि यह विज्ञान की दिशा में वास्तविक महत्वपूर्ण कदम है।

यदि राजनीतिक सिद्धांत के ह्रास या निधन का वक्तव्य सही माना जाए तो यह शास्त्रीय सिद्धांत के संदर्भ में

3.) शास्त्रीय चिंतनधारा से संबंधित विद्वान तथ्यों के विश्लेषण के बजाए नैतिक मुद्दों के बारे में चर्चा करते थे।

ब्लॉण्डेल शास्त्रीय राजनीतिक सिद्धांत की परंपरा का समर्थन करते हुए समकालीन व्यवहारवादी राजनीतिक सिद्धांत की प्रशंसा करता है। उसका निष्कर्ष है कि व्यवहारवादी राजनीतिक सिद्धांत शास्त्रीय परंपरा के पुनरोदय में बहुत बड़ा योगदान दे सकता है।

वह स्टेबाइन, माइकेल ओकशॉट तथा लियो स्ट्रॉस जैसे विद्वानों के योगदान को स्वीकार करते हुए आग्रह करता है कि "महान शास्त्रीय परंपरा के ग्रंथों का गहराई से अध्ययन करना और बार-बार पुनः चिंतन करना ऐसा मानसिक व्यवहार पैदा करता है जिससे मनुष्य और उसके भाग्य के प्रति सही दृष्टिकोण पैदा किया जा सके।" लेकिन शास्त्रीय परंपरा का आलोचनात्मक प्रशंसक होते हुए इसकी दुर्बलताओं पर भी प्रहार करता है और लिखता है, "ऐसे दृष्टिकोण में राजनीतिक सिद्धांत और राजनीतिक दर्शन की भूमिका नकारात्मक है।"

4

Page No.
Date :

ब्लॉण्डेल की मान्यता है कि राजनीतिक सिद्धांत के क्षेत्र में व्यवहारवाद का महत्वपूर्ण योगदान है। वह ब्रियां बैरी और जॉन रॉल्स के योगदान की चर्चा करते हुए कहता है कि उनका स्पष्ट मानना है कि राजनीतिक सिद्धांत सामाजिक परिस्थितियों से जुड़ा होता है। रॉल्स की कृति 'ए थ्योरी ऑफ जस्टिस' शास्त्रीय परंपरा के पुनरुत्थान की दृष्टि से बहुत बड़ा योगदान है जिसे व्यवहारवाद के आधारों से पुष्ट किया गया है। ब्लॉण्डेल के अनुसार व्यवहारवादी राजनीतिक सिद्धांत मानकात्मक सिद्धांत का विरोधी नहीं है। उसके शब्दों में, "यह सही दृष्टिकोण होगा कि व्यवहारवादी विश्लेषण से राजनीतिक सिद्धांत की हत्या नहीं होती बल्कि उन क्षेत्रों में अधिक उन्नत हो सकता है जिनमें व्यवहारपरक शोध कार्य अधिक सफल सिद्ध हुए हैं।"

इस प्रकार ब्लॉण्डेल इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि राजनीतिक सिद्धांत जीवित है। ..... आलोचनात्मक राजनीतिक ~~सिद्धा~~ सिद्धांत अभी सजीव है।

OPPO A5 2020